शोध मंथन, Impact Factor 6.726 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255 (e): 2454-339X
Vol. X, No.III, pp (983-986) July - Sep. 2019 

# वर्तमान समय में गुरूकुल शिक्षा की प्रांसगिकता

**गुडडी बाला**
*शोध छात्रा, इतिहास विभाग*
*रघुनाथ गर्ल्स (पी०जी०), कॉलिज मेरठ।*
*Email-bhavna.choudhary122@gmail.com*

**सारांश**

*भारतवर्ष की सभ्यता और संस्कृति बडी ही प्राचीन है। इस प्राचीन संस्कृति को सहेजना और संवारना प्रत्येक भारतीय नागरिक का कर्त्तव्य है। वर्तमान युग की आवश्यकताओं को अपनी प्राचीन परम्पराओं से संयुक्त करने तथा उनको आवश्यकता के अनुरूप ढालने में ही व्यक्ति और समाज की उन्नति निहित है। भारत की शिक्षा विषयक आवश्यकताएँ एक ऐसी पद्धति से पूरी हो सकती है। जिसमें नेये ज्ञान विज्ञान को समुचित स्थान प्राप्त हो और साथ ही भारतीय संस्कृति के प्रति विद्यार्थियों की आस्था भी कायम रहे। अपने देश के साहित्य, कला भाषा एवं परम्पराओं से पूर्ण परिचय के साथ–साथ आधुनिक युग की उपाल्बधियों तथा प्रवृत्तियों की जानकारी जिस पद्धति से प्राप्त हो। वहीं भारत की शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकतओं को पूर्ण कर सकती है। भारत की यह गुरूकुल शिक्षा पद्धति वर्तमान में भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है।*

***मुख्य शब्द–*** *गुरूकुल, उपत्यकाओं, परवर्ती, सर्वागीर्ण, शास्त्रार्थ।*

## प्रस्तावना

गुरूकुल का आशय है वह स्थान या क्षेत्र जहाँ गुरू का कुल यानि परिवार निवास करता है[1] प्राचीन भारत में शिक्षक ही गुरू माना जाता था उसका परिवार उसके यहाँ शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों से ही पूर्ण माना जाता था। **''सा विद्या या विमुक्तये''** विद्या वह है जो मानव को मुक्ति का मार्ग दिखाती है। भारतीय मनीषियों ने शिक्षा को शरीर मन और आत्मा के विकास द्वारा मुक्ति का साधन माना है।[2] शिक्षा केवल भौतिक उपलब्धियों तक सीमित न रहकर आध्यात्मिक चितंन तक का लक्ष्य निर्धारित करती है। शिक्षा का उद्देश्य मानव को भौतिक सामग्री जुटाना मात्र नही है बल्कि उसे पूर्ण मानव बनाता है जो परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी हो इस प्रकार के मानव निमार्ण के महत्वपूर्ण घटक माता, पिता, और गुरू होते है। आधुनिक युग निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश मे कहा है **''मातृमान, पितमान, आचार्यामान पुरूषों वेद''।**[3] अर्थात् जिस बालक को प्रशस्त गुणों से परिपूर्ण माता पिता और आचार्य प्राप्त होते है वह धन्य है। माता पिता अपने बालक को जैसा बनाना चाहत है उन्हें भी स्वयं वैसा ही बनना पडता है बालक का निमार्ण गर्भावस्था से ही प्रारम्भ हो जाता है कहा जाता है कि अभिमन्यू ने चक्रव्यूह[4] प्रवेश की शिक्षा माता के गर्भ से ही सीख ली थी।

पाँच वर्ष की आयु पर्यन्त माता पिता से उत्तम संस्कार प्राप्त करने के पश्चात् बालक के जीवन का वास्तविक निमार्ण प्रारम्भ ब्रह्मचारी विनीत भाव से विद्याध्ययन प्रारम्भ करता है।[5]

वैदिक काल में बडे–बडे राजाओं के पुत्र पुत्रियों के समान सामान्य प्रजाओं की सन्ताने भी भेदभाव को छोडकर गुरूकुलों में जाकर अध्ययन करती थी।[6] शिक्षा प्राप्ति में जहाँ प्रथम घटक के रूप में माता पिता का शिक्षित सदाचारी धार्मिक होना आवश्यक है वहाँ दूसरा घटक सुन्दर सातविक नैसर्गिक परिवेश प्राकृति के सुरमय वातावरण में बालक का विकास होता है वैसा कृत्रिम वातावरण में नही हो सकता।

वेदो मे वर्णित है। **'उपहरे गिरीणा संगमे च नदीनाम धिया वि प्रोडजायत।'** यही कारण है कि प्राचीनकाल के गुरूकुल खुले प्रशस्त वनों मैदानों, नदियो के तटो और सुरमय पर्वतो की उपत्यकाओं मे जन कोलाहल से दूर हुआ करते थे।[7]

गुरूकुल शिक्षा प्रणाली में श्रम का स्थान महत्वपूर्ण माना जाता है प्रत्येक बालक को वहाँ श्रम की व्यवहारिक शिक्षा दी जाती है[8] छन्दोग्य उपनिषद मे हारिद्रुमत मुनि ने जाबाल सत्काम को शिक्षा देने से पूर्व क्षेत्र सेवा का कार्य ही सौंपा था क्योंकि वह युग पशुपालन और कृषि जीविका का था अतः गो सवर्धन और वन्य रक्षण का कार्य उसकी शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाया गया।[9]

इस प्रकार पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त क्षेत्रीय कार्य सम्पादन का प्रमाण पत्र भी तत्कालीन शिक्षा में अनिवार्य था गुरूकुलीय शिक्षा प्रणाली तप त्याग और श्रम आधारित थी गुरू के महत्व के कारण इन विद्या के केन्द्रों को गुरूकुल कहा गया जहाँ गुरू बालक को अपने संरक्षण मे लेकर उसमें देश जाति और कुल के विशेष संस्कार को मिटाकर उसे विराट कुल की शिक्षा देता है प्रकृति जीव और ईश्वर की आध्यात्मिक शिक्षा देकर उसकी आत्मा का विकास करता है।[10] पृथ्वी, अंतरिक्ष की जानकारी प्रदान कराना है ब्रह्ममचार्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ की प्रक्रिया समझाकर विश्व मानवतावादी दृष्टि का संन्यास के रूप में अन्तिम लक्ष्य प्रतिपादित करता है।

प्राचीन समय में गुरूकुलो में शिक्षा प्राप्त कर राष्ट्र का ही नही अपितू सम्पूर्ण विश्व का मार्ग दर्शन करने वाले अनेक महापुरूष हुए है।[11] **प्रश्नोपनिषद** में सुकेशा पिप्पलाद के आश्रम में जाकर शिक्षा ग्रहण करते है। **तैतरीय उपनिषद** मे वरूण से **भ्रगु, छन्दोग्य उपनिषद** मे हारिद्रुमत से सत्यकाय तथा वृहदारण्यक उपनिषद में प्रजापति से इन्द्र, रामायणकाल में वशिष्ट विश्वमित्र तथा अगस्त्य के आश्रम गुरूकुल ही थे भारद्वाज का आश्रम भी गुरूकुल ही था। गुरूकुल उस शिक्षा प्रणाली के आदर्श रूप है जहाँ धुपद और द्रोण, श्रीकृष्ण और सुदामा बिना किसी भेदभाव के समान रूप से विद्या ग्रहण करते थे समान, खान पान रहन–सहन और शिक्षा की समता मूलक व्यवस्था वहां विद्यमान थी परवर्ती काल में तक्षशिला, नालंदा, काशी तथा बलभी में इसी गुरूकुलीय परम्परा दर आधारित बडे विश्वविद्यालय स्थापित किये गये, मथुरा, अजंता तथा भुवनेश्वर की कलाकृतियों में गुरू शिष्य ओर शिक्षण के अनेंक दृश्य अंकित है।

इस प्रकार गुरूकुलों की शिक्षा पद्धति व्यवहारिक ओर चरित्र विमार्ण मूलक थी इसके लिए आश्रमवास अनिवार्य था वहा रहते हुए बहयचार्य व्रत धारण करना तथा आचार्य के निकट

रहकर उनके व्यक्तिगत जीवन से शिक्षा ग्रहण करना अत्यंन्त महत्वपूर्ण था। उस प्राकृतिक वातावरण में रहकर वलिष्ठ शरीर का निर्माण, समानता का जीवन आत्मिक विश्वास तथा सर्वांगीण व्यक्तित्व का निर्माण गुरूकुलीय शिक्षा पद्धति की विशेषताएँ थी। किन्तु परिवर्तन प्रकृति का स्वभाव है जो राष्ट्र कभी विश्व का नेतृत्व करता है।[12] कभी वह उन्नति की दौड़ में बहुत पीछे रह जाता है भारत की दशा भी वही हुई नाना प्रकार के दोश सामाजिक जीवन में प्रवेश करने लगे एक समय ऐसा आया जब चारों ओर अज्ञान अन्धकार की काली घटाओं ने देश के गगन को आच्छादित कर दिया पाखण्ड, अन्याय अत्याचार अविधा का दानव प्रबल हो उठा। ऐसे कठिन समय में काठियावाड की धरती पर मूलशंकर का उदय हुआ और सच्चे शिव की खोज करते–करते दिव्य तेजधारी महर्षि दयानन्द के रूप में भारतीय गगन मे सूर्य के समान चमकना भारतीय इतिहास की अपूर्व घटना है स्वामी दयानन्द ने सर्वत्र व्याप्त अज्ञान, पाखण्ड और दुराचार को ललकारा शास्त्रार्थ' किये वेद का भाष्य किया सत्यार्थ प्रकाश जैसा अमर ग्रन्थ लिखकर सत्य का मार्ग दिखाया उसी अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में गुरूकुल शिक्षा पद्धति का उद्घोष किया।[13] महर्षि के अनन्य शिष्य स्वामी श्रद्धान्द ने भगीरथी के पावन तट पर कांगड़ी ग्राम में गुरूकुल की स्थापना की गुरूकुल के यशस्वी स्नातको ने समाज और राष्ट्र जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे अपने चरित्र और योग्यता की छाप लगा दी। देश की स्वतन्त्रता की लडाई में गुरूकुल की अग्रगणय भूमिका रही।

संस्कृत और संस्कृति की प्रतिष्ठापना में गुरूकुल के स्नातको ने अदभूत कार्य किये[14] गुरूकुल कांगडी से प्रेरणा लेकर देश मे बालक बालिकाओं के अनेक गुरूकुल स्थापित हुए एक नये भारत का सपना साकार होता दिखाई देने लगा।

आज चारों और जब निराशा और असन्तोष का वातावरण बना हुआ है आध्यात्मिकता का स्थान भोगवाद ने ले ले लिया। प्राचीन जीवन के मूल्य नष्ट हो रहे है देशभक्ति की भावना लुप्त हो रही है देश दुर्बल और निर्धन होता जा रहा है ऐसी विषम परिस्थति मे पुन आवश्यकता है प्राचीन ऋषियों द्वारा प्रवर्तित गुरूकुलीय शिक्षा प्रणाली की प्रतिष्ठापना की जब तक देश में नैतिक चारित्रिक और भारतीय वैदिक शिक्षा का सूर्य भासित नही होगा तब तक ''तमसो ज्ञान विज्ञान'' संस्कृत और संस्कृति की उच्चतम शिक्षा शारीरिक बौद्धिक, आत्मिक, सामाजिक बल से परिपूर्ण, स्नातक उच्चतम शिक्षा प्राप्त कर सांस्कृतिक दूत बनकर देश–देशान्तर में जाएगे तभी हमारा स्वाधीन भारत का सपना सकार होगा।

## संदर्भ ग्रन्थ

1 सत्यार्थ प्रकाश– तृतीय समुल्लास
2 दयानन्द सरस्वती, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, वैदिक मंत्रालय अजमेर भाग 1
3 मातृ मान, पितृमान् आचार्यवान् पुरूषों वेद! शतपथ ब्राह्मण **14–6**
4 तैतरीय उपनिषद् शिक्षाध्याय बल्ली, प्रथम अनुवाद
5 स्वामी श्रद्धान्द (यजुवेद) पृ० **99,100**
6 आर्य समाज का इतिहास भाग–3 सत्यकेतू विद्यालंकार पृ० **336**

7 स्वामी श्रद्धानन्द श्री सत्यदेव विद्यालंकार पृ० स०– **403**
8 गुरूकुल पत्रिका नवम्बर 1956 गुरूकुल समाचार
9 आर्य समाज का इतिहास– सत्यकेतू विद्यालंकार भाग–3
10 गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय सौ वर्ष का इतिहास डॉ० जयदेव वेदालंकार
11 आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का इतिहास–शिवदयाल
12 ऋषि दयानन्द और आर्य समाज–डॉ० ज्वलतपुर कुमार शास्त्री प्रथम व द्वितीय भाग
13 आर्य समाज का इतिहास भाग–2 इन्द्र विद्यावाचस्पति सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा।
14 प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति–कृष्ण कुमार